हिन्दी- विभाग

डॉ० ललिता कुमारी सिंह.

B.A. I

विषय — आदिकाल की प्रवृत्तियाँ.

किसी भी साहित्य पर वहाँ
विभिन्न परिस्थितियों, वातावरण का प्रभाव
पड़ता है। आदिकालीन हिन्दी साहित्य में भा
और भाषा की शैली की दृष्टि से
जो विविधता है, उसके मूल में भी शुक्रवार
उस काल की विभिन्न परिस्थितियाँ ही हैं
काल की परिस्थितियाँ इस प्रकार थीं:—

(1) राजनीतिक परिस्थितियाँ — इस काल मे
हर्षवर्द्धन साम्राज्य में पतन के साथ राजनी
परिस्थितियाँ प्रारम्भ होती है। यवनों के
को हर्षवर्द्धन ने सामना करते हुए विफलता
दिखलाई। हर्ष के मृत्यु उपरान्त मुस्ल
अपनी सत्ता कायम कर ली और हिन्दू

का ह्रास होने लगा। इसी समय राजा पृथ्वीराज, जयचन्द के आपसी संघर्ष के परिणाम स्वरूप देश में अराजकता, गृह-कलह, विद्रोह आक्रमण और अशांति की स्थिति पैदा हो गई। विदेशी आक्रमणकारियों से मुकाबला करने के बदले राजपूत राजाओं ने जातीय गौरव भुलाकर अपने व्यक्तिगत राज्य के विस्तार की बात सोची। अतः कवियों में तीन प्रकार की प्रवृतियाँ पनपीं। आध्यात्मिक जीवन की ओर मुड़ना, मरते-मरते

भी रस भोग लेना और तलवार के गीत गाकर गौरव के साथ जीना ही उनका उद्देश्य हो गया था। स्त्री-भोग तथा हठयोग द्वारा आध्यात्मिक पलायन का साहित्य आया। हर्षवर्द्धन के दरबार में जनभाषा और अपभ्रंश के कवियों को भले ही स्थान न हो, संस्कृत के कवियों और पंडितों की काफी प्रतिष्ठा थी। राजाश्रित कवि राजाओं की प्रशस्ति में काव्य-रचना किया करते थे।

धार्मिक परिस्थितियाँ — ईसा के छठी शताब्दी तक देश का धार्मिक वातावरण शान्त रहा। विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में आपसी मेल-जोल बढ़ने लगा था। ७ वीं शताब्दी में अलवार तथा नायंवार संतों द्वारा धार्मिक स्थिति में परिवर्तन होने लगा। जैन इस तरह के धार्मिक आन्दोलन उठ खड़े हुए। जैन तथा शैव मतों में टकराहट होने लगी। 12 वीं शताब्दी के आगमन तक वैष्णव मत का भी प्रभाव जमने लगा था। शैव मत की भी प्रतिष्ठा हुई। महायान शाखा द्वारा शनिवार जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, ध्यान धारणा आदि का प्रयोग होने लगा। धर्म में व्यभिचार तथा आडम्बर का प्रभाव कायम हो गया। सोमनाथ के मंदिर को महमूद द्वारा लूटा जाना भी मंदिरों के वैभव का ही पता देता है।

धार्मिक अशांति के कारण वेद ग्रन्थों और पुराणों में खंडन-मंडन चल रहा। बौद्ध सन्यासी यौगिक चमत्कार में लीन थे

जैन पौराणिक आख्यानों को नये ढंग से गढ़-गढ़
जनता में अपना प्रभाव जमाने की कोशिश कर
रहे थे। उसी समय भारत में इस्लाम का भी
प्रवेश हुआ। सभी धर्मों का मूल स्वरूप प्रा
लुप्त हो चला था। धार्मिक परिस्थितियाँ
विषम और असंतुलित थी। जनमानस पर
असंतोष का भाव व्याप्त था। कवियों ने
अपनी मानसिकता के अनुसार वीरता
और शृंगार का साहित्य रचा

जा रहा था।